बेटी या बेटा
जिम्मेदार कौन?

जुही जैन

काफी पुरानी बात है। ब्रह्मलोक में धूम मची थी। चारों तरफ गीत-संगीत का माहौल था। ब्रह्मा के बेटे अथर्वन की शादी देवी से हो रही थी। तीन साल बाद देवी के पांव भारी हुए। बाप बनने की खुशी में अथर्वन की खुशी की सीमा न रही। देवी से बोला, "मुझे बेटा ही देना जिससे परिवार का नाम आगे बढ़ाने वाला कोई हो सके।"

सुनकर देवी चिंता में पड़ गई। वह किस तरह से लड़का पैदा करने का वादा करे। देवी ब्रह्मा के पास पहुंची। बोली, "मेरी सहायता कीजिए। मुझे बेटा ही दीजिए। आप तो संसार के रचयिता हैं।"

ब्रह्मा जी क्या करते। यह तो उनके बस में भी नहीं था। उन्हें भी पता नहीं था कि देवी के गर्भ में लड़का है या लड़की। फिर वे इसमें क्या कर सकते थे। समय पूरा हुआ। देवी का जापा हुआ। उसने बेटी को जन्म दिया। अथर्वन गुस्से से पागल हो गया। उसने देवी का बेटी पैदा करने के अपराध में परित्याग कर दिया।

बेटे की आस

यह प्रथा तो लगता है हमेशा से चली आ रही है। आज भी बेटी या बेटा पैदा होने की जिम्मेवारी औरत पर डाली जाती है। पुरुष चाहे शहर का बाबू हो, या गांव का किसान। इस मामले में उनकी राय में खास अंतर नहीं है। जहां ही बहू ब्याह कर घर आई, घर-भर में आस सी दौड़ जाती है। दादी को चाहिए पहला पोता, बुआ को भतीजा और पिता को बेटा। लड़की के मायके का माहौल भी इससे अलग नहीं होता। नानी को नवासा और मामा को भांजा चाहिए पहले-पहल। ऐसे में बहू के पास सिर्फ एक ही रास्ता रह जाता है। दिन रात भगवान से दुआ मांगना कि बेटा ही देना।

जिम्मेवारी किसकी

बेटा पैदा हो गया तो औरत के भाग्य खुल गए। घर में उसके लिए घी-दूध का ढेर लग जाता है। पर अगर बेटी हुई तो गिने-चुने लोग ही कहेंगे कि लक्ष्मी आई है। अधिकांश समय तो यही सुनने को मिलेगा, "कोख ही हरी न हो पाई", "भाटा जन दिया", "घर में अंधेरा हो गया।"

सिर्फ यही नहीं, बेटे और बेटी की परवरिश में भी काफी भेदभाव बरता जाता है। चाहे वह खाना-पीना हो, पढ़ाई हो, प्यार-दुलार हो, बेटी के साथ कंजूसी होती है। और सबसे अहम बात जो सामने आती है वह यह कि बेटी पैदा होने के लिए औरत को ही दोषी ठहराया जाता है। और सज़ा भी उसी को भुगतनी पड़ती है। **पर सवाल है कि क्या वाकई बेटी जनना गुनाह है और अगर गुनाह है तो क्या दोषी औरत है?**

बेटी या बेटा—कौन तय करे

सबसे पहले तो यह देखना होगा कि गर्भ में पल रहे बच्चे का लिंग कैसे तय होता है। धरती पर सभी प्राणी छोटी-छोटी इकाइयों से बने हैं जिन्हें कोशिका कहा जाता है। कोशिका बालू के नन्हें कणों से भी छोटी और अलग-अलग तरह की होती हैं। चमड़ी कोशिका से त्वचा बनती है, हड्डी

कोशों से हड्डियां, ऐसे ही दिमाग, खून, नाखून के कोश या सैल होते हैं। हर इंसानी कोश में तेइस जोड़े पतले धागे जैसे रेशे होते हैं जिन्हें 'क्रोमोसोम' या गुणसूत्र कहते हैं। इन्हीं की वजह से बच्चे की शक्ल मां-बाप जैसी बनती है। इन तेइस जोड़ों में एक जोड़ा बहुत खास है, जिसे लिंग गुणसूत्र कहते हैं। औरतों में यह जोड़ा दो 'x'क्रोमोसोम का होता है। पुरुषों में यह जोड़ा एक 'x'और एक 'y'क्रोमोसोम होता है।

जब पुरुष और औरत का मिलन होता है तो पुरुष के बीज औरत के शरीर में जाते हैं। पुरुष के इस बीज को शुक्राणु कहते हैं। हर शुक्राणु में सिर्फ एक x या y 'क्रोमोसोम' होता है। माहवारी के समय औरत के शरीर में एक खास अंडकोश तैयार होता है। हर अंडकोश में केवल एक x 'क्रोमोसोम' होता है। जब पुरुष का x 'क्रोमोसोम' औरत के x क्रोमोसोम' से मिलता है तब लड़की पैदा होती है। अगर पुरुष का 'y' 'क्रोमोसोम' औरत के 'x' क्रोमोसोम से मिलता है तब लड़का पैदा होता है।

यह तो पुरुष तय करता है

मतलब यह हुआ कि बेटी या बेटा हो यह पुरुष ही तय करता है। ऐसा इसलिए क्योंकि औरत के पास तो केवल x 'क्रोमोसोम' होते हैं। जबकि पुरुष के पास दोनों x और y क्रोमोसोम। इसलिए पुरुष ही प्रधान कारक होता है जिसके 'क्रोमोसोम' से लड़की या लड़के का जन्म तय होता है। इसमें औरत का कोई दोष नहीं। लिहाज़ा इसकी सज़ा औरत को क्यों मिले। औरत बच्चा जनती है, उसका लिंग नहीं तय करती है।

नीम-हकीम खतरा-ए जान

इस बात को समझ जाने के बाद यह जानना भी जरूरी है कि झाड़-फूंक, या नीम-हकीम की बूटी से बेटा पैदा नहीं हो सकता। यह महज संजोग की बात है कि आपने किसी से दवा ली और बेटा हो गया। न ही यह भगवान के हाथ में होता है। इसलिए हर बात की सही सूचना-जानकारी हो तो हम गलत लोगों के हाथों से बच सकते हैं। इसलिए बेटा हो या बेटी उसे भरपूर सुरक्षा, अवसर और प्यार मिलना चाहिए।

बेटी जनना कोई गुनाह नहीं

अब हमें ज़रूरत है विज्ञान की इस सच्चाई को आपस में बांटने की। अगर हमसे कोई कहे कि तुम 'भाटे ही भाटे' पैदा कर रही हो, ईंट नहीं,तो हम दुखी न हों। न ही किस्मत को कोसें। हमें ज़रूरत है समाज का नज़रिया बदलने की। क्यों न ऐसे सोचें कि ईंट नहीं होगी तो मकान नहीं बनेगा। और अगर मकान की नींब मज़बूत न हो तो मकान ढह जाएगा। क्या इसी नींव को मजबूती नहीं प्रदान करते हैं भाटे? यानि बेटी और बेटा दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अब हमें समाज के इस ईंट कुलदीपक और लकड़ी देने वाले संबोधन से हटकर औरतों की शक्ति, हिम्मत और परिवार में योगदान को स्वीकारना होगा। बचपन से दिए जाने वाले संस्कारों में बदलाव लाना होगा। पितृसत्तामक मूल्यों को छोड़ना होगा। लड़की को बोझ न समझकर उसके स्वतंत्र अस्तित्व को पहचानना होगा। बेटियां पैदा होने पर खुशी ज़ाहिर करने पर ही समानता और बराबरी जैसे शब्दों का कोई अर्थ होगा। □